भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर

कक्षा -10   प्रश्न बैंक - झेन की देन

1 लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगने की बात क्यों कही है?

उत्तर: जापानी तीव्र गति से प्रगति करना चाहते हैं। एक महीने के काम को एक दिन में पूरा करना चाहते हैं। जापानियों ने अमेरिका से प्रतिस्पर्धा के चक्कर में अपने दिमाग को और तेज़ दौड़ाना शुरू कर दिया ताकि जापान हर मामले में अमेरिका से आगे निकल सके। इसलिए वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं। कार्य की अधिकता के कारण ऐसा लगता है कि अब वहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है, कोई बोलता नहीं, बकता है। जब वे अकेले पड़ जाते हैं, तो वे स्वयं से ही बड़बड़ाने लगते हैं। उन्होंने स्वयं को विकसित देशों की पहली पंक्ति में लाने की ठान ली है। इसलिए लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगने की बात कही है।

2 जापान में चाय पिलाने की विधि को क्या कहते हैं? उसकी क्या विशेषता है ?

उत्तर: जापान में चाय पिलाने की विधि को चा-नो-यू कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि वहाँ असीम शांति होती है। यहाँ तक कि सन्नाटा भी गूँजता है। लेखक ने वहाँ की पवित्रता और शांति की तुलना जयजयवंती से की है। इसमें दिमाग़ की रफ़्तार बिलकुल धीमी पड़ जाती है और दिलोदिमाग़ को बहुत सुकून मिलता है। लोग भूत और भविष्य काल को भूलकर वर्तमान में जीने लगते हैं। चाय पिलाने की इस विधि के द्वारा मानसिक बीमारियों की संख्या पर रोक लगी है। जापान के लोग एवं अन्य भी इस विधि का ख़ूब लाभ उठाते हैं।

3 जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है?

उत्तर: जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, वहाँ ग़ज़ब की शांति होती है। माहौल इतना शांत होता है कि पानी के खदबदाने की आवाज़ भी सुनाई देती है। वहाँ केवल तीन लोगों को प्रवेश दिया जाता है। इसका उद्देश्य यही होता है कि दिमाग़ शांत हो। यहाँ व्यक्ति को लगता है कि वह अनंतकाल में जी रहा है।

4 चाजीन ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं, जिनसे लेखक प्रभावित हुआ?

उत्तर: चाजीन ने बड़े अदब से मेहमानों का स्वागत किया। वह लेखक और उनके मित्र को देखकर उठ खड़ा हुआ। उन्हें कमर झुकाकर प्रणाम किया। दो....झो....(आइए, तशरीफ़ लाइए) कहकर स्वागत किया। बैठने की जगह दिखाई। फिर उसने अँगीठी जलाई और उस पर चायदानी रखी। इसके बाद बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन ले आया। तौलिए से बरतन साफ़ किए। ये सारी क्रियाएँ उसने गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं। ऐसा लगा कि वहाँ जयजयवंती के स्वर गूँज रहे हों। वहाँ का वातावरण अत्यंत शांत था और लेखक इससे अत्यंत प्रभावित हुआ।

5 'टी-सेरेमनी' में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

उत्तर: 'टी-सेरेमनी' में शांति का अत्यधिक महत्त्व होता है। इसलिए वहाँ पर एक बार में तीन से अधिक व्यक्तियों को प्रवेश नहीं दिया जाता है। वहाँ इतनी शांति होती है कि चाय के लिए उबलते पानी की आवाज़ भी स्पष्ट सुनाई देती है। चाय पीते समय तो वहाँ केवल सन्नाटे की गूँज सुनाई पड़ती है। इस शांति का उद्देश्य यही होता है कि दिमाग़ शांत हो, उसकी रफ़्तार धीमी हो, मन को शांति मिले।

6 चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

उत्तर: चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में अप्रत्याशित परिवर्तन महसूस किया। उसके मन को अपार शांति महसूस हुई। उसे लगा कि उसके दिमाग की रफ़्तार बंद हो चुकी थी। उसके मन में और आसपास सब कुछ शून्य-सा हो गया था। उसे अनुभव हो गया कि भूत और भविष्य दोनों ही काल मिथ्या हैं, सत्य तो केवल वर्तमान है, अतः मानसिक शांति के लिए व्यक्ति को केवल वर्तमान में ही जीना चाहिए। लेखक को वर्तमान काल मानो अनंतकाल जैसा लगा, जहाँ शांति-ही-शांति थी। इस प्रकार इस दो घूँट चाय ने उसे जीवन जीने की कला सिखा दी।

7. लेखक के मित्र ने जापानियों में मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर: लेखक के मित्र ने भागदौड़ भरी ज़िंदगी को मानसिक रोग का कारण बताया। जापानियों द्वारा अमेरिका की आर्थिक गति से प्रतिस्पर्धा करना इसका मुख्य कारण है। इस प्रतिस्पर्धा के कारण जापानियों ने अपने दैनिक कार्यों (दिनचर्या) की गति बढ़ा दी है। वे एक महीने का काम एक दिन में करने का प्रयास करते हैं, इस कारण वे शारीरिक व मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं। लेखक के ये विचार सत्य हैं क्योंकि शरीर और मन मशीन की तरह काम नहीं कर सकते और यदि उन्हें ऐसा करने के लिए विवश किया जाए, तो उनका मानसिक संतुलन बिगड़ना अवश्यंभावी है। मन और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उन्हें शांत एवं तनावमुक्त रखना आवश्यक है।

9. लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लेखक का कहना है कि हमारा भूतकाल सत्य नहीं है, क्योंकि वह बीत चुका है। भागे हुए साँप की लकीर पर लाठी पीटने से कोई फ़ायदा नहीं होता है। लेखक का कहना है कि भविष्य तो अनिश्चित है, इसलिए उसके बारे में तनाव पालने से भी कोई लाभ नहीं होता है। वर्तमान में जीना सीखने से ही सही सुख मिलता है। वर्तमान पर हम बहुत हद तक नियंत्रण कर सकते हैं और वर्तमान के सुख-दुख की पूरी-पूरी अनुभूति भी कर सकते हैं।

****